मथुरादास की डायरी • मुद्राराक्षस

जगतराम एण्ड सन्स
मेन बाजार, गांधी नगर, दिल्ली-110031

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक

जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाजार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण

1992

मूल्य

पचास रुपये

मुद्रक

अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

MATHURADAS KI DIARY (Humour & Stire)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अनुक्रम

परनिंदा सुख उर्फ एरिस्ट्रोक्रेट झाड़ू	7
पुरस्कार प्रसंग	10
सावधान ! आगे जनवादी रेजीमेंट है	14
अध्यक्षता का आनन्द	19
अथ श्री दिल्ली पुलिस पुराणम्	23
काशी विश्वनाथ : शासकीय नियमावली	27
विधायक बिकाऊ हैं···!	32
आलोचना के खतरे	37
ऋणंकृत्वा चर्बी पिवेत	41
पड़ता सिद्धान्त	46
चुनाव चक्र और एकता	51
उत्तर प्रदेश का कीर्तिमान	55
व्यंग्यकार की मेख	59
गरीबी की रेखा के इधर और उधर	64
समीक्षा सुख	68
टेढ़ा उल्लू	72
बड़ा क्या है : सच्चा सुख या सत्ता सुख	77
हिन्दी की शुभचिन्तक	82
ब्लैड युग की साहित्यिक हरकतें	87
बड़े बनने का गुर !	91
भारत भवन से मथुरादास की अपील	96
कम्प्यूटर क्रान्ति	101
उपदेशक की जमीन	105

विधायक बिकाऊ हैं···!

एम० पी० यानी संसद सदस्य तो अब बिकाऊ नहीं, दिखाऊ रह गए हैं। एक जमाना बीच में आया था। उम्मीद बँधी थी मोरारजी के जाने के बाद, कि दूकान पर वे भी नजर आया करेंगे बैंगनों के साथ। मगर बाद में गड़बड़ हो गई। एम० पी० इस दूकान की बोरी से उस दूकान की बोरी में तो जरूर जाता दिखता है पर बिकाऊ नहीं है। आप उसे वहाँ रखा हुआ देख सकते हैं। और एम० पी० अगर अकबर अहमद डंपी का है तो न बिकाऊ होगा न दिखाऊ बल्कि डराऊ ज्यादा हो सकता है।

इधर मथुरादास पूछताछ करते रहे—विधायक की दर क्या है? उसका बाजार भाव क्या है?

इनमें मैं उन विधायकों को शामिल नहीं कर रहा हूँ जो मौजूद दिल्ली में हों मगर मुख्यमन्त्री और राज्यपाल उन्हें हैदराबाद में खड़ा मान रहे हों। ऐसी स्थिति में विश्वसनीयता घट जाती है, मुख्यमन्त्री या राज्यपाल की नहीं विधायक की। दिल्ली में विधायक को पत्रकार साक्षात् देखता है, बैठकर पीता भी है (बहुत हल्के रंग की बिना दूध चीनी की चाय ही होगी), फोटो भी खींचता है और चलते वक्त पूछता है, "विधायकजी, आपका कुर्ता ताजा खरीदा क्यों लगता है? कहीं आप कोई और तो नहीं हैं जिसे परेड कराने के लिए नया कुर्ता दिलवाया गया हो?"

तो बन्धु, ऐसे माहौल में राज्यपाल की नहीं विधायक की विश्वसनीयता घटती है।

अभी हमारे माननीय राष्ट्रपति ने नई परम्परा न डालने की विजय दिखाते हुए भी एक नई परम्परा डाल दी—वे विधायकों से मिले। उनसे प्रेमपूर्वक बात की, पर उन्हें गिना नहीं। यह स्वस्थ परम्परा है। अब किसी भी प्रदेश का राज्यपाल बहुमत को लेकर मिलने आने वालों का स्वागत

अवश्य करेगा। उन्हें प्रेमपूर्वक चाय भी पिलाएगा। पर उन्हें गिनने से इनकार कर देगा। इसके बाद वह अपनी सन्तुष्टि से जिसे चाहे मुख्यमन्त्री बना दे।

एक समय में ऐसी घटना राष्ट्रीय पैमाने पर हो गई थी। ढाई अदद संसद सदस्य लेकर चौधरी चरणसिंह नीलम संजीव रेड्डी से मिले। रेड्डी ने भी लोकतन्त्र की रक्षा की। संसद सदस्य गिनने से इनकार कर दिया। गिनने से क्या संख्या मानने से ही। जगजीवन बाबू बहुत-से एम० पी० ले गए, चौधरी साहब ढाई। वैसे आप जिद ही करें तो मैं राजनारायण को एक अदद पूरा माने लेता हूँ। खैर।

रेड्डी साहब ने कहा—सूची, संख्या कुछ नहीं। उनकी सन्तुष्टि हो गई है। प्रधानमन्त्री चौधरी बनेंगे।

यह तो विषयान्तर था। सच कहूँ, अब हर सही चर्चा विषयान्तर ही है।

तो मथुरादास इन दिनों जानना चाहते हैं कि विधायक का रेट आजकल क्या चल रहा है!

आलू का रेट जानना आसान है। आप जाइए और सब्जी वाले से पूछ आइए। विधायकों के मामले में ऐसा नहीं है। विधायकों का सब्जी वाला कौन है? यही नहीं, विधायकों का बाजार कहाँ है? गुड़ मण्डी होती है, भूसा मण्डी होती है, सब्जी मण्डी होती है। विधायक मण्डी किस आजादपुर में है?

इस मामले को लेकर बड़ी मगजमारी करनी पड़ी। आपातकाल में कानून बना कि जो चीज बन्द डिब्बे में मिलती है उस पर कीमत लिखो। कीमत लिख दी गई पर डिब्बे ही गायब हो गए। न रहेगा डिब्बा न दिखेगा दाम।

विधायक का रेट कहाँ लिखा जाए? उसके शरीर के किस भाग पर? माथे पर रेट लिखा हो तो वह रेट कम, कलंक ज्यादा लगेगा जबकि किसी चीज का उचित मूल्य होना कोई कलंक तो है नहीं। रेट विधायक की पीठ पर हो तो और मुश्किल है। लोग कहेंगे—पीठ पीछे यह भाव है उनका, सामने तो उन्हीं से पूछना पड़ेगा।

मान लीजिए विधायक का रेट उसकी छाती पर टाँक दिया जाए। अच्छा भाई रेट छाती पर टँक गया। लेकिन आपको नहीं मालूम कि ऐसी हालत में वे विधायक कम किसी प्राइमरी स्कूल का ब्लैक बोर्ड ज्यादा लगेंगे। वह ऐसे कि रेट की तो एक लम्बी सूची देनी पड़ेगी।

दर तबादला—

(क) प्रथम श्रेणी लाभ के पद
(ख) प्रथम श्रेणी सूखे पद
(ग) निचली श्रेणी ऊपरी आमदनी
(घ) निचली श्रेणी सूखी
(ङ) तबादला मास्टरी का
(च) अभियन्ता उच्च श्रेणी
(छ) अभियन्ता निचली श्रेणी

दर बहाली—

दर नियुक्ति—(श्रेणी अनुसार)

दरों में डिस्काउण्ट—

(क) दोस्ती के आधार पर
(ख) रिश्तेदारी के आधार पर
(ग) धौंस के आधार पर

मुफ्त जनसेवा—(कन्याओं के अभिभावक निजी तौर पर जानकारी लें)

दर फाइलों की—

(क) रुकवाने की।
(ख) चलवाने की।
(ग) गोल कराने की।

दर दल बदल—(निजी तौर पर मिलें)

यहाँ दल बदल की दर जानने के लिए निजी तौर पर मिलना इसलिए जरूरी होता है कि भुगतान न चेक से होता है न ड्राफ्ट से।

खैर, अब आप खुद सोचिए, अगर इतनी लम्बी-चौड़ी इबारत किसी विधायक के सीने पर लगी हो तो लोग उसे दूर से खाज-खुजली का विज्ञापन समझेंगे। इसलिए मथुरादास इस गम्भीर समस्या पर गौर करते रहे कि

विधायक का रेट उसके शरीर के किस हिस्से पर लिखा जाय।

वैसे इस सारे मामले में एक पेंच है। रेट हर किसी का हर समय और हर स्थान पर एक नहीं रहता। वह बदलता भी रहता है। कभी-कभी उसमें बोली लगने की नौबत भी आ जाती है। एक बार सब्जी मण्डी में दो धनवानों में ठन गई। कद्दू की जो गाड़ी वे दो सौ में खरीदते थे उसकी बोली बढ़ती गई। यहाँ तक कि वही गाड़ी पच्चीस हजार में बिकी। यह दूसरी बात है कि उसी शाम पच्चीस हजार देकर कद्दू खरीदने वाले ने गाड़ीवान को अकेले में पीट-पाटकर पच्चीस हजार ही नहीं गाड़ी के बैल भी छीन लिए।

यों तो सामान्यतः यह सुझाव बुरा नहीं है कि विधायकों का एक सट्टा बाजार या फाटका अथवा भद्र भाषा में शेयर मार्केट खोल दिया जाए। 'खरीद्दा', 'बेच्चा' के मनोहारी शोर में बड़े-से-बड़ा सौदा सहजता से निबटाया जा सकता है। इसका बड़ा स्टाक एक्सचेंज जाहिर है दिल्ली में ही बनेगा क्योंकि राजनीति का सबसे बड़ा शायद एशिया का सबसे बड़ा राजनीतिक औद्योगिक शहर दिल्ली है। यहाँ राजनीति का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है और देश की मंडियों में राजनीति का माल यहीं से जाता है।

जिस तरह भारत के अन्य उद्योग सौ घरानों के कब्जे में हैं, उसी तरह दिल्ली में भारत की पोलिटिकल इण्डस्ट्री भी पचीस घरानों के हाथ में है। और वे घराने अकेले इन्दिरा गांधी के नहीं हैं। पच्चीस में से उनका भी एक ही घराना है।

तो दिल्ली के राजनीतिक सट्टा बाजार से हमें बराबर इस तरह की सूचनाएँ मिलती रहनी चाहिए—दलबदल में उछाल। तबादला नरम।

सट्टा बाजार में विधायकों की खरीद-फरोख्त ही नहीं, समय आए तो राज्यपालों तक की खरीद-फरोख्त का जुगाड़ बैठ सकता है।

बहुत-से लोगों का कहना है अब राजनीति में नैतिकता नहीं रही। वे भोंदू हैं। नैतिकता के लिए रहने की जगह राजनीति ही बची है? बल्कि मैं तो एक और बात पूछना चाहूँगा। जिस नैतिकता का वास राजनीति में होगा वह नैतिकता कहाने लायक रहेगी? दूध को आप नाली में रहने के

लिए कहते हैं ? दूध नाली में डालेंगे तो नाली नाली ही रहेगी पर दूध का हुलिया बदल जाएगा।

इसीलिए मैं यह सवाल कभी नहीं उठाता कि राजनीति में नैतिकता होनी चाहिए। राजनीति में खुद राजनीति बची रह जाए यही क्या कम गनीमत होगी ?

आलोचना के खतरे

मथुरादास ने अपने जानते भर बड़ा उम्दा मजाक किया था कि वे अब आलोचक बनेंगे। उसकी विधिवत् घोषणा का नाट्य भी उन्होंने किया। मगर उस वक्त अपने उत्साह में आलोचक होने के खतरे नजरअन्दाज कर गए।

तब उन्हें नहीं मालूम था कि साहित्य के खालसा नामवरसिंह की हिट-लिस्ट में मथुरादास भी शामिल हो जाएँगे।

आलोचना आखिर आलोचना है। कुटीर उद्योग तो है नहीं कि सींकें उठा लाए और टोकरी बनानी शुरू कर दी। वह एक तरह का पराक्रम होता है। किसी जमाने में क्षत्रियों में चामुंडराय हुआ करते थे। बहुत-से लोगों की खोपड़ियाँ काट डालने के बाद वे चामुंडराय कहलाते थे।

वे एक तरह के फ्रीलांसर हुआ करते थे। जिस राजा से ठीक मतलब निकल आए उसी से कमरे में चामुंडराई का फेंटा बँधवाकर खोपड़ियाँ कतरते रहते थे। अगर उस राजा से नहीं पटी तो चामुंडराई दूसरे से बँधवा ली। पर यह बँधवानी जरूर होती थी। राज्याश्रय के बिना खोपड़ियाँ काटते रहने में लाभ तो नहीं ही था, खतरे भी बढ़ जाते थे।

आलोचना के चामुंडराय को भी चामुंडराई बँधवानी पड़ती है। चामुंड-राई बाँधी हो तो हिटलिस्ट तैयार करना अधिकार में शामिल हो जाता है। आश्रय से अपनी रोटी सुरक्षित रहती है और दूसरे के सत्तू में बालू मिलाते रहने का सुभीता हो जाता है।

पिछली बार हर नौसिखिया आलोचक की तरह मथुरादास ने भी कुछ अधकचरी बातें कह दीं। यह ठीक नहीं किया। आलोचक थोड़ा परिपक्व हो जाये, यानी चेहरा सुचिक्कण और बदन दुहरा-दुहरा-सा दिखने लगे तो ऐसी बातें जायज होती हैं।